International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 26-12-2022, Accepted: 12-01-2023, Published: 28-01-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 7-8

रसखान के काव्य में भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन

डॉ० अरविन्द कुमार उपाध्याय
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, केशव प्रसाद मिश्र राजकीय महिला महाविद्यालय औराई, भदोही, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
रसखान के काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन भारतीय संस्कृति के विविध संस्कृतियों का संगम है। रसखान के काव्य की संस्कृति सभी संस्कृतियों को एक धांगे में पिरोने का काम करती है। रसखान के काव्य में कृष्ण भारतीय संस्कृति के दिव्य प्रतिमान है। भगवान कृष्ण को रसखान प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं जब कि कृष्ण का संबंध भगवत् गीता, महाभारत तथा भागवत से है। रसखान कृष्ण भक्त हैं वे सगुण तथा निर्गुण दोनों रूपों में भगवान के प्रति अपना व्यापक दृष्टिकोण प्रदर्शित करते है। रसखान ने भगवान कृष्ण के सभी लीलाओं जैसे बाललीला, रासलीला, फागलीला, कुंजलीला, प्रेमवाटिका, सुजान रसखान आदि लीलाओं को अपने काव्य में बहुत ही बखूबी ढंग से एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया है।रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था परन्तु भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन होने के पश्चात् अपना नाम रसखान रखा और वे मुस्लिम से हिन्दू हो गए।

मूल शब्दः संस्कृति का दिग्दर्शन, रसखान के काव्य

भारतीय इतिहास में सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से पुराणों का बड़ा महत्व है। पुराणों में सांस्कृतिक इतिहास है इसलिए सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कृष्ण को ढूंढना सर्वथा उचित है। यहां कृष्ण को रसखान अपना आराध्य बनाकर अपनी भक्ति को न्यौछावर करके अपनी रचनाओं को विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। रसखान के कृष्ण ऐसे कृष्ण हैं जो मुरली बजाते नाचते गाते हंसते हैं। रसखान के काव्य में भारतीय संस्कृति का प्रकाश सम्यक रूप से दृष्टिगोचर होता है। कृष्ण की प्रेम लीला का वर्णन स्वयं सांस्कृतिक प्रकाश है। कृष्ण राधा के जिस प्रेम का मूल्यांकन रसखान करते हैं वह रसखान के प्रेम का स्वरूप आध्यात्मिक है। रसखान ने प्रेम भक्ति के जिन उपादानों का प्रयोग किया है उनसे सांस्कृतिक तत्वों का बोध होता है। रसखान को अपने आराध्य कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम दिखाई पड़ता है और वे सदैव उन्हीं का सानिध्य चाहते है और स्वयं को अपने आराध्य के प्रति समर्पित कर दे, वे कहते है कि इसके लिये चाहे मुझे किसी प्रकार का फल भुगतना पड़े। रसखान का यह भाव भारतीय संस्कृति की मर्यादाओं की पुष्टि करता है। रसखान भगवान कृष्ण के प्रति अपनी श्रध्दा को न्यौछावर करते हुये आगामी जन्म की बात अपने काव्य में करते हुये दिखलाई पड़ते है। वे कहते है कि ईश्वर उन्हें चाहे मनुष्य बनाए या पशु–पक्षी या फिर पत्थर इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता वे सिर्फ कृष्ण का साथ चाहते हैं। इस तरह रसखान के सवैयों में कृष्ण के प्रति अपार प्रेम तथा भक्ति–भाव दृष्टिगोचर होता हैं वे कहते है कि–

"मानुष हौं, तो वही 'रसखानि' बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहां बसु मेरो चरौं नित नंद की धेनु मंझारन॥"
पाहन हौं तो वही गिरि को जो र्ध यो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

यहां ब्रज गोकुल नंद आदि शब्द ब्रज की संस्कृत का द्योतक है। रसखान ने होली के त्यौहार को भारतीय संस्कृति का अंग स्वीकारा है। रसखान ने अपनी रचनाओं में जो होली का वर्णन किया है उसमें सांस्कृतिक तत्व स्वयं प्रभावित होते हैं। राधा कृष्ण के साथ रसखान ने होली के त्यौहार को भारतीय संस्कृति के मनोहारी चित्र को प्रस्तुत किया है। रसखान अपने काव्य में उस समय का वर्णन करते हुये कहते है कि राधा कृष्ण फाग खेल रहे हैं उस समय कृष्ण के सुन्दरता का वर्णन करना इतना आसान नहीं है परन्तु रसखान के काव्य में भारतीय संस्कृति की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है–

"खेलतु फाग लख्यी पिय प्यारी को ता सुख की उपमा किहिं दीजै।
देखत ही बनि आवै भलै रसखान कहा है जो वारि न कीजै॥
ज्यौं ज्यौं छबीली कहै पिचकारी लै एक लई यह दूसरी लीजै।
त्यौं त्यौं छबीलो छकै छवि छाक सो हेरै हँसे न टरै खरौ भीजै॥"

रसखान ने कृष्ण और गोपियों के प्रेम की मनोहर झांकियां प्रस्तुत की है।चहु ओर कुंकुम, गुलाल और केसरिया रंग की पिचकारी छूट रही है। रसखान द्वारा बहुत ही अद्भुत एवं मनोरम छटा को बिखेरने का प्रयास किया गया है। मनमोहिनी राधा मौज मस्ती में उल्लासित है। प्रेमी की सारी आकांक्षाओं की तृप्ति से मदहोशी छाई हुई है। राधा आज मनमोहि कृष्ण से मनमानी कर सकी है इसलिए कृष्ण से ह्रदय हारण करने जा रही है। यह मनोहारी दृश्य भारतीय संस्कृति की परंपराओं का पूर्णतः निर्वहन करने में सक्षम है।
रसखान ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के नौ निधियों (पद्य निधि, महापद्य निधि, नील निधि, शंख निधि, नंद निधि मकर निधि, कच्छप निधि, मुकुन्द निधि और खर्व निधि) तथा आठ सिद्धियों (अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व) को अपने काव्य का आधार बनाया। रसखान के काव्य में वियोग श्रृंगार की कालिंदी प्रवाहित होती है। 'प्रेमवाटिका' में संयोग श्रृंगार की अभिनवता है। रसखान कह रहे हैं कि भगवान कृष्ण को द्वारिका में रहकर ब्रज की याद आ रही है। वे दुःखी होकर रुक्मणी से कह रहे है कि ग्वालों की लाठी और कम्बल के लिए अगर उन्हें तीनों लोको का राज त्यागना पड़ा तो भी वे त्याग देंगे। वे इसके लिए आठों सिध्दि और नौ निधियों का भी सुख छोड़ने के लिए तैयार हैं। वे अपनी आँखों से ब्रज के वन, बागों और तालाब को जीवन भर निहारना चाहते हैं।

"या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहुँ पुर को तजि डारौ।
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौ॥
ए रसखानि जबै इन नैनन ते ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौ।
कोटिक ये कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौ॥"

रसखान की भावाभिव्यक्ति रस से युक्त है। रसखान स्वच्छन्द भाव धारा के कवि हैं। उनकी कविता आत्मानुभूति का निरायास प्रतिफलन है। शास्त्रीय नियमों से अपरिचित रसखान ने अपने अनुभूत के लिए स्वानुकुल मार्ग बनाया। उनके विशुद्ध प्रेम की अनुभूति प्रवण किंतु अनावृत्ति अभिव्यक्ति 'सुजान रसखान' में हुई है। रसखान ने श्रीकृष्ण के अति मनोरम बाल लीलाओं का वर्णन किया है। प्रभु कृष्ण के हाथ से माखन रोटी छीननें वाले कौवे के भाग्य की सराहना करते हुये कृष्ण के बाल लीला का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

"धूरि भरे अति सोभित स्यामजू ,तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अंगना, पग पैजनि बाजति पीरी 'कछोटी।।
वा छवि को 'रसखानि' बिलोकत, बारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि–हाथ सौं लै गयौ माखन–रोटी।।"

रसखान के काव्य की महत्वपूर्ण शिल्पगत विशेषता निरलंकृति है। रसखान ने अपने काव्य में अलंकारों का प्रयोग बहुत ही बखूबी ढंग से किया है, किन्तु अत्यन्त प्रेम की दृढ़ता, अनन्यता हृदय बोधक सरलता तथा अनुभूति और स्पंदन की चरमावस्था में रसखान के पास अलंकार प्रयोग का उतना अवकाश ही नहीं रहा है। हम कह सकते है रसखान एक रस सिध्द कवि है। रसखान के काव्य में यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा विरोधाभास आदि के उदाहरण मिलते है। इसलिए कहा जा सकता है कि शब्द चयन और छन्द विधान पर समकालीन रचना धर्मिता और सर्जनात्मक प्रवृत्तियों का गहरा प्रभाव पड़ा।उनकी संवेदना का साँचा समकालीन रचनात्मक प्रवृत्तियां निर्मित करती है। रसखान के शिल्प संस्कार भक्त कवि निष्ठा और सहज स्वभाविक भाषा प्रवाह से संचालित है। भक्त कवियों की भाँति रसखान को दोहा,कवित्त, सवैया छन्द आदि अत्यधिक प्रिय थे। रसखान के आराध्य भगवान कृष्ण है और इनके काव्य में कृष्ण भक्ति की धारा प्रवाहित होती है। रसखान भी अपने प्रभु से अलग नहीं रह सकते जैसे उनकी गोपिया अलग नहीं रह सकती। रसखान की गोपियां कहती है हे सखी! मैं कृष्ण के होठों पर रखी यह मुरली अपने होठों पर नहीं रखूँगी। क्योंकि इसी मुरली ने मुझे कृष्ण से दूर कर दिया है। रसखान ने अपने काव्य में कृष्ण से अनुराग रखने वाली एक गोपी के मुरली से ईर्ष्या की बात करते हुये अपनी सखी से कहती है–

"मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी वन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भाव तो वोहि मेरो 'रसखानि' सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
पै मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।"

रसखान के काव्य में कितनी गहराई है उन्होंने बड़ें तथ्य की बात सीधे ढंग से प्रस्तुत की है। रसखान ने ब्रजबालाओं के क्रिया–कलापों तथा दही बेचने तक का वर्णन बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया है। रसखान द्वारा जो रीति परंपराओं का वर्णन है वह संस्कृति का अंग है। रसखान के काव्य का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि माधुर्य भक्ति का दर्शन भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण दर्शन है। भगवान के लीला तत्व के अंतर्गत जो वार्तालाप होता है वह पूरी तरह भारतीय संस्कृति की प्रकाशिका है। राधा कृष्ण का प्रेम समस्त जगत का प्रेम है। संस्कृति का प्रभाव संवेदना एवं शिल्प दोनों में स्थापित किया गया है। रसखान का सवैया, कवित्त, दोहा मध्य कालीन कवियों का साधन रहा है। भारतीय संस्कृति के प्रकाशन में रसखान की अभिवृत्ति के साथ उनकी भक्ति भारतीय संस्कृति के रूप में है। स्पष्टतःहम कह सकते हैं कि रसखान के काव्य में भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन होता है। रसखान ने अपने सवैये में कृष्ण तथा उनकी लीला–भूमि वृन्दावन की प्रत्येक वस्तु के प्रति अपना आकर्षण प्रदर्शित करते है। वे कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति का उदाहरण पेश करते हैं। उनका कहना है कि ईश्वर उन्हें अगले जन्म में चाहे मानव योनि दे या पशु–पक्षी या फिर पत्थर, इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। वे सिर्फ कृष्ण का साथ चाहते हैं। इस तरह हम रसखान के विचारों में कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम तथा भक्ति–भाव को देखते है। रसखान ब्रज के लिये संसार के सभी सुखों का त्याग करने के लिये भी तैयार हैं। प्रत्येक मानव को रसखान के भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा रखते हुए उसको आत्मसात् करने की आवश्यकता है क्योंकि रसखान का काव्य प्रेम दर्शन पर आधारित है, प्रेम मनुष्य में मानवता का संस्कार भरता है। प्रेम के अध्ययन के लिए हमें रसखान के संस्कृति का अवलोकन करना अनिवार्य है।

सन्दर्भ सूची

1. रसखान ग्रंथावली सटीक – प्रो०देशराज सिंह भाटी (भक्ति–भावना सवैया –01) पेज संख्या–155
2. रसखान ग्रंथावली सटीक – प्रो० देशराज सिंह भाटी (फागलीला सवैया –186) पेज संख्या–273
3. रसखान ग्रंथावली सटीक –प्रो० देशराज सिंह भाटी (ब्रजप्रेम सवैया –252) पेज संख्या–315
4. रसखान ग्रंथावली सटीक –प्रो० देशराज सिंह भाटी (बाललीला सवैया – 32) पेज संख्या–179
5. रसखान ग्रंथावली सटीक–प्रो० देशराज सिंह भाटी (मुरली प्रभाव सवैया –128) पेज संख्या–233
6. प्रेमवाटिका–रसखान
7. रसखान रचनावली–विद्यानिवास मिश्र
8. रसखान पदावली संकलन–प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
9. रसखान काव्य तथा भक्ति भावना–डॉ0 मजदा असद
10. रसखान ग्रंथावली की भूमिका–आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र